Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 6 ~ Issue 1 (2018) pp: 82-87
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

इतिहास दर्शन और इतिहासवाद

डॉ. रंजीता जाना
प्रवक्ता, इतिहास विभाग
एल.बी.एस. महिला पीजी कॉलेज ,बधाल, जयपुर ,राजस्थान

प्रस्तावना :– इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति इति–ह–आस–इन तीन शब्दों से मानी गयी है जिसका अर्थ है – निश्चित रूप से ऐसा हुआ। आचार्य दुर्ग द्वारा अपनी निरूक्त (छपतनाज) भाष्यवृति में इसकी व्याख्या करते हुए लिखा है – 'इति हैवमासीदिति यत् कथ्यते तत् इतिहास : अर्थात यह निश्चित रूप से इस प्रकार हुआ था, यह जो कहा जाता है, वह इतिहास है।[1] इति–ह–आस में अन्तिम शब्द अधिक महत्व रखता है, क्योंकि इसका उल्लेख प्राचीन वाङमय में बहुत स्थानों पर हुआ है। हेरोडोटस ने इतिहास के लिए पहली बार 'हिस्ट्री' शब्द का प्रयोग किया। हेरोडोटस ने 'हिस्ट्री' शब्द को गवेषणा व अनुसंधान के सातव्य से प्रतिपादित किया था।[2]

विद्वानों ने इतिहास को अलग–अलग अर्थों में लिया है तथा परिभाषा भी भिन्न–भिन्न प्रकार से दी है। इतिहास को कहानी कहकर 'परिभाषित करने वाले मनीषियों में रेनियर, ट्रैवेलियन, पिरेन, तुइजिंगा, औलिवर और फ्रेंच अकादमी के साथ साथ कार्लाइल और डॉ. राममनोहर लोहिया का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।[3] इतिहास को एक सामाजिक विज्ञान मानने वालों में पावेल, राउज, चार्ल्स फर्थ, पिरेन आदि का नाम उल्लेखनीय है।[4] कुछ विद्वानों ने इतिहास को सामाजिक विज्ञान के साथ–साथ एक विशुद्ध विज्ञान के रूप में भी परिभाषित किया है। इनमें वाल्टेयर, वूल्फ, रॉके, सीले, डार्विन, ब्यूरी आदि का नाम दिया जा सकता है। कॉलिंग वुड, डॉ. गोविन्द चन्द पाण्डेय, वाल्स, हीगल, मार्क्स आदि का एक विचार है कि इतिहास वस्तुतः चिन्तन विद्या का इतिहास है।[5] प्रो. ई.एच कार कहते हैं – ''इतिहास वस्तुतः इतिहासकार तथा तथ्यों के मध्य अन्तः क्रिया की एक अविच्छिन प्रक्रिया है, तथा अतीत एवं वर्तमान के मध्य एक अंतहीन संवाद है। इस तरह वह एक सेतु है जो अतीत और वर्तमान के मध्य स्थित है।[6] रमेशचन्द्र मजूमदार ने कहा है कि इतिहास का सम्बन्ध आंतरिक सत्य के प्रति जिज्ञासा है। सत्य का अन्वेषण ही इतिहास है।[7]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इतिहास मानव समाज की प्रगति का एक क्रमबद्ध अध्ययन है और उसकी प्रगृति में सहायक भी है। इतिहास केवल राजनीतिक घटनाओं का क्रमानुसार अध्ययन नहीं है वह तो उसके अध्ययन में केवल सुविधा प्रदान करता है। वास्तव में इतिहास मनुष्य के संगठित सामाजिक समूहों का चाहे वे कितने भी प्रगतिशील या पिछडे हुए हों – उनके आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि जीवन के सभी पहलुओं का अध्ययन है।[8]

विषय प्रवेश :–इतिहास में मानव के कार्य व व्यवहार का अध्ययन किया जाता हैं इतिहासकार जब अतीत के क्रियाकलापो में मानवीय मस्तिष्क की भूमिका को समझने का प्रयास करता है तो इतिहास, इतिहास दर्शन का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। दर्शन एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें गूढ रहस्यों को खोजा जाता है। एतिहासिक सत्य की बौद्धिक अभिव्यक्ति इतिहास दर्शन कहलाती है। व्हाट इज हिस्ट्री? इस प्रश्न का उत्तर देने का समुचित प्रयास इतिहास दर्शन कहा जा सकता है। इतिहासवाद का प्रवर्तन हीगल को माना जाता है जिसने सर्वप्रथम इतिहासवाद शब्द का प्रयोग किया। इतिहास मे सत्य का अन्वेषण किया जाात है एवं सत्यान्वेषण की विद्या को इतिहासवाद कहा जा सकता है। डी. आर्की ने अपने ग्रन्थ ''इतिहास का स्रोत धर्म निरपेक्ष व पवित्र में इतिहासवाद शब्द का प्रयोग इतिहास दर्शन के समान अर्थ में किया है वस्तुतः इतिहास दर्शन एवं इतिहासवाद दोनो में ही इतिहास की वैज्ञानिक अवधारणा पुष्ट होती है।

इतिहास दर्शन :– इतिहास दर्शन शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग वाल्तेयर ने किया था। कॉलिंग वुड के अनुसार वाल्तेयर को इतिहासदर्शन का जनक कहा जा सकता है।[9] वाल्तेयर का एकमात्र उद्देश्य इतिहास दर्शन द्वारा इतिहास अध्ययन को आलोचनात्मक तथा वैज्ञानिक बनाना था। प्रो. वाल्श महोदय ने इतिहास–दर्शन के अन्वेषण का क्षेय इटालियन दार्शनिक विको को दिया है। हर्डर ने 1784 में अपनी रचना आइडिया फार फिलासॉफी ऑफ हिस्ट्री ऑफ मेनकाइंड के माध्यम से इतिहास दर्शन को प्रकाश मे लाया। तथा हीगल ने अपनी रचना लेक्चर्स ऑन फिलॉसाफी ऑफ हिस्ट्री के माध्यम से इतिहास को गूढ विषय के रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत किया।[10] 18 वीं तथा 19 वीं सदी के प्रख्यात मौलिक विचारकों की सर्वोत्कृष्ट देन तथा विश्व के लिए उनका सर्वश्रेष्ठ उपहार इतिहास दर्शन हैं हीगल ने इतिहास दर्शन का व्यवहार सम्पूर्ण विश्व चिंतन के लिए किया परंतु प्रत्यक्षवादियों ने इसका व्यवहार उन सामान्य नियमों की खोज के लिए किया जो कि घटनाओं को प्रभावित करते हैं प्रत्यक्षवादी सिद्धांत का मुख्य प्रतिपादक आगस्त काम्टे थे। काम्टे के इतिहास दर्शन

से अभिप्राय अतीत की घटनाओं के माध्यम से इतिहास में सामान्य नियमों का प्रतिपादन करना था। इन दार्शनिक इतिहासकारों की अवधारणा के अनुसार इतिहास दर्शन का उद्देश्य स्वयं का चिंतन, विश्व इतिहास तथा इतिहास के सामान्य नियमों से हैं।[11]

मार्क्स का इतिहास– दर्शन हीगल के इतिहास दर्शन का संशोधित रूप था। हीगल ने स्वतंत्रता के लिए इतिहास का चित्रण द्वन्द्वात्मक प्रगति के लिए किया तो मार्क्स ने द्वन्द्वात्मक प्रगति को वर्गहीन साम्यवादी समाज की स्थापना के रूप में इतिहास का चित्रण किया। उसने इतिहास की आर्थिक व्याख्या को इंगित करते हुए यह कहा कि इतिहास का निर्माण आर्थिक तत्व करते हैं। यद्यपि मार्क्स के इतिहास की आर्थिक व्याख्या सिद्धांत को मान्यता नही दी जाती, फिर भी उसकी उपेक्षा भी नहीं की गयी।[12] स्पेंगलर ने भी इतिहास दर्शन के विकास में योगदान किया है। उसने ऐतिहासिक पुनरावृत्ति का विचार दिया जो 19 वीं शताब्दी के प्रत्यक्षवादियों और वैज्ञानिकों के विचार से पूर्णतः भिन्न है। उसका मत सभ्यताओं के जन्म, विकास और अन्त से है। इतिहासकारों को वह निर्देषित करता है कि वे तथ्यों के विवरण के अतिरिक्त विषय के अर्थ को भी बतलायें। इस तरह उसके विचार में इतिहास अतीत की घटनाओं की व्याख्या मात्र नहीं अपितु भविष्य की घटनाओं की, जो सादृष्यों को मानने से ना कर दिया और इतिहास की तुलनात्मक व्याख्या प्रस्तुत की वह इतिहास का प्रदर्शन विकास, उच्चतम पूर्णता और अवसान के रूप में करता है। उसका कहना है कि इतिहास विघटन और पतन से प्रभावित नहीं है। अतीत की महान संस्कृतियों के अन्वेषण के साथ वह ऐतिहासिक प्रक्रिया के सामान्य सिद्धांतो की खोज करने का प्रयास करता है।[13]

एतिहासिक प्रक्रिया गतिशील होती है। इस गतिशीलता के कारण प्रत्येक युग में समाज के स्वरूप में परिवर्तन होना स्वभाविक है। दासता, सामंतवाद, निरकुंश शासन, क्रांति, प्रजांतत्र शासन प्रणाली का उद्भव व विकस, परिवर्तित समाज एवं इतिहास की गतिशीलता का परिचायक है। परिवर्तित समाज के इतिहासकार तथा दार्शनिक समसामयिक दृष्टिकोण से ऐतिहासिक तथ्यों को समसामयिक सामाजिक मूल्यों के अनुसार देखते है। इस प्रकार इतिहास की गतिशीलता के साथ इतिहास दर्शन का स्वरूप भी निरंतर परिवर्तनशील होता है।[14] इतिहास दर्शन अनिवार्यतः चेतना की इतिहासरूपी प्रक्रिया की एक अवस्था है। इतिहास में अतीत अनुचिंतन है। इस प्रकार इतिहास दर्शन किसी विशेष समाज अथवा ऐतिहासिक युग के चित की क्रियात्मक छवि होता है। [15]

समयानुसार इतिहास निरंतर बदलता रहता है। इसलिए इतिहास दर्शन को भी बदलना होगा। सभी पदार्थो का इतिहास होता है, इसलिए दर्शन भी। इतिहास और दर्शन के तादात्म्य का कारण बताते हुए क्रोचे ने कहा कि दार्शनिक के प्रकथन, लक्षण या संस्थान का अविर्भाव एक निश्चित व्यक्ति के मन में देशकाल के एक निश्चित बिंदू पर और निश्चित परिस्थितियों के अधीन है। प्रकृति ऐतिहासिक है क्योंकि प्रकृति विज्ञान ऐतिहासिक परिस्थितियों के अधीन है इस प्रकार दर्शन भी ऐतिहासिक है क्योंकि दार्शनिक चिंतन ऐतिहासिक परिस्थितियों के अधीन है।[16]

इतिहास दर्शन का मूल तत्व ऐतिहासिक गवेषणा है दर्शन का अभिप्रायः सार्वभौमिक सत्य का अन्वेषण है। इतिहास दर्शन ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् का अन्वेषण करता है। वह सत्य जो समसामयिक मानवीय समाज के लिए कल्याणकारी हो। मानव कल्याण के लिए एतिहासिक तथ्यों का स्वरूप सुंदर होता है। प्रत्येक युग का दार्शनिक इतिहासकार सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में उन्हीं तथ्यों को प्रकाश मे लाता है जो समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो सके। परिणामस्वरूप इतिहास दर्शन में सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् का अन्वेषण होता है। इसका उद्देश्य तथ्य एवं सत्य का यथार्थ निरूपण है। इस प्रकार इतिहास दर्शन ज्ञान पर आधारित एक विशेष प्रकार की गवेषणा है। दार्शनिक इतिहासकार समसामयिक सामाजिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।[17]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इतिहास–दर्शन का प्रयोग 18 वीं तथा 19 वीं सदी में आरम्भ हुआ था किंतु इसी रूप में नहीं। इतिहास दर्शन का प्रयोग विविध रूपों में किए जाने की स्थिति ने इतिहास को विवादास्पद बना दिया। एक वैज्ञानिक की तरह जब इतिहासकार ने प्रयोगशालाओं के अनतर्गत प्रयोग परीक्षण के क्षेत्र में अपने को असमर्थ पाया तो अपने व्यावहारिक के स्थान पर सैद्धान्तिक पक्ष का आश्रय ग्रहण कर लिया इससे इतिहास– दर्शन के दो स्वरूप बन गये।[18]

1. विश्लेषणात्मक इतिहास– दर्शन
2. परिकल्पनात्मक इतिहास दर्शन

विश्लेषणात्मक इतिहास–दर्शन – विश्लेषणात्मक इतिहास दर्शन का अभिप्राय अतीत का आलोचनात्मक तथा सारांशयुक्त प्रस्तुतीकरण है।[19] कालिंगवुड के अनुसार परिकल्पनात्मक इतिहास दर्शन का स्वरूप प्राचीनतम है जबकि विश्लेषणात्मक इतिहास दर्शन का स्वरूप आधुनिक हैं।[20] यह अवधारणा वैज्ञानिक युग की देन है। आरम्भ में इतिहास को दर्शन तथा साहित्य का अंग स्वीकार किया जाता था। अरस्तू ने इतिहास को कविता से तुच्छ स्वीकार किया है। अरस्तू ने इतिहास को कविता से तुच्छ स्वीकार किया है।[21] परंतु 19 वीं सदी में नेबूर तथ रांके ने उसे वैज्ञानिक विधाओ से अलंकृत कर दिया था। आज उसका स्वरूप विश्लेषणात्मक हो गया जिसमें इतिहास चिंतन की मूलभूत समस्याओं पर विचार करना एवं उसे वैज्ञानिक विधाओं से अलंकृत करना मुख्य उद्देश्य बन गया हैं। इतिहास दर्शन के अन्तर्गत इतिहास में सामायीकरण सिद्धांतो को प्रतिरोपित कर उसे वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया है। इसमें मनुष्य के लिए के उपयुक्त अध्ययन का विषय मनुष्य माना गया है, किन्तु यह अनुभव किया गया है कि मनुष्य का वैज्ञानिक अध्यन इसलिए कुछ कठिन है, क्योंकि अतीतकालिक मानवीय कार्यो का प्रत्यक्षीकरण तथा निरीक्षण सम्भव नही है। इतिहास का विश्लेषणात्मक दर्शन एतिहासिक ज्ञान के सामान्य रूप पर केन्द्रित हो गया है। इतिहास दर्शन के इस स्वरूप का उद्देश्य एतिहासिक तथ्यों का सत्यान्वेषण है।[22] रूसों, कार्लायल, हीगल, काम्टे, मील, मार्क्स तथा बकल ने इतिहास में सामान्यीकरण के सिद्धांतो को प्रतिरोपित कर उसे वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया है प्रकृति का

*Corresponding Author: डॉ. रंजीता जाना

वैज्ञानिक अध्ययन संभव है। मनुष्य का वैज्ञानिक अध्ययन यदि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है, क्योंकि अतीतकालिक मानवीय कार्यो का प्रत्यक्षीकरण तथा अवलोकन सम्भव नहीं है। क्रोचे के अनुसार ऐतिहासिक पुनर्रचना अनुभवमूलक तथा इतिहासकार के मस्तिष्क की उपज है। इस प्रकार मनुष्य के अध्ययन का विषय मनुष्य है। विश्लेषणात्मक इतिहास दर्शन में इतिहासकारों ने इतिहास की मूलभूत समस्याओं का समाधान ऐतिहासिक साम्यवाद के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।[23] विश्लेषणात्मक इतिहास दर्शन के तहत एतिहासिक व्याख्या के प्रश्न को दो विषय – आकस्मिता एवं व्यक्ति विशेष और अधिक जटिल बनाते है। इतिहास की कई घटनाओं को आकस्मिकता एवं व्यक्ति विशेष ने प्रभावित किया है अतः उनकी तर्कमूलक व्याख्या नही की जा सकती। विश्व इतिहास तथा भारतीय इतिहास मे अनेक घटनाऐं व्यक्ति विशेष के चरित्र एवं आकस्मिक संयोगो द्वारा घटित होती है। अतः उनकी एक तर्कमूलक व्याख्या नही की जा सकती है। इतिहास में व्यक्ति विशेष की भूमिका अभी भी मुख्य समस्या बनी हुई है।[24] कार्लबेकर के अनुसार प्रत्येक पीढी का इतिहासकार अपने युग की आवश्यकतानुसार इतिहास लिखता है। अतः प्रत्येक युग में इतिहास में परिवर्तन अवश्यम्भावी है।[25] अतः एतिहासिक व्याख्या का मूल्य सम्पृक्त व्याख्या होना स्वाभाविक है। चूंकि विश्लेषणात्मक इतिहास दर्शन की अवधारणा में मूल्य सम्पृक्त व्याख्या उचित प्रतीत नही होती। अतः विश्लेषणात्मक दार्शनिक इतिहासकार स्वयं को मूल्यों के प्रश्नों से दूर रखने का प्रयास करता है। इस प्रकार तर्क मूलक व्याख्या विश्लेषणात्मक इतिहासदर्शन की प्रमुख कसौटी है।

<u>परिकल्पनात्मक इतिहास दर्शन :–</u>

इसका उद्भव प्लेटो तथा अरस्तू से माना जाता है।[26] इतिहास के कालक्रम की प्रगृति के साथ इस अवधारणा का निरंतर विकास होता जा रहा है।[27] परिकल्पनात्मक इतिहास से दार्शनिकों का अभिप्राय एतिहासिक घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में इतिहास का विशेष अर्थ तथा लक्ष्य को ढूंढना हैं। इन लोगो ने इतिहास की परियोजना को मानवसमाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। इतिहास की धार्मिक अवधारणाएँ इस विचारधारा की पुष्टि करती हैं। यूनान, भारत, इसाई, इस्लाम आदि सभी धर्मों की अवधारणाए पृथक–पृथक देखने से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि इतिहास की अपनी गति, स्वर और परियोजना होती है जो मानवीय क्रिया–कलापों को नियन्त्रित करती हैं और परिकल्पनात्मक इतिहास दार्शनिक इन्ही गूढ रहस्यों को समझने का प्रयास करते रहते हैं।

ऐसे लोगो में इब्रखल्दून, विको, हर्डर, हीगेल, मार्क्स आदि का नाम लिया जा सकता।[28] इब्रखल्दून एक ऐसे दार्शनिक थे। जिन्होने समाज की अवयवी तथा जीव वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की, इनका मानवीय दृष्टिकोण बहुत विशाल था और वे दासप्रथा परंपरागत शासन पद्धति व व्यापारिक शोषण के विरूद्ध थे। सर्वप्रथम वही एक ऐसे इतिहासकार, विचारक एवं दार्शनिक थे जिन्होने राष्ट्रीय इतिहास पर भौगोलिक परिस्थितयों के प्रभाव का विश्लेषण किया था।[29] इटली के विको ने इतिहास को मानवकृत और प्रकृति को ईशवरकृत मानते हुए इतिहास और प्रकृति के ज्ञान को भिन्न–भिन्न प्रकार का माना था। उसने इतिहास दर्शन के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा है कि वह आत्मप्रकाशीय, मानव–रचित, मानवचेष्टा और चिन्तन का फल है, साथ ही उसका स्वरूप समाज एवं संस्थाओं के निर्माण से निष्पन्न है। इतिहास में मनुष्य उन्ही वस्तुओं और प्रक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकता है जिसका निर्माण एवं सर्जन उसने स्वयं किया है। इतिहास वह प्रक्रिया है जो मानव द्वारा भाषा, रूढि, नियम, शासन आदि के विकास में सन्निहित है।[30] इतिहास गति के दो पक्ष होते है – कोर्स तथा रिकोर्स। विको. के अनुसार प्राचीनकाल कोर्स का युग था तथा मध्यकाल रिकोर्स का [31]

जर्मनी के दार्शनिको मे कांट का स्थान महत्वपूर्ण है। उनका मानना था कि विश्व की प्रक्रिया योजना के अनुसार गतिशील है।[32] इतिहास दृश्य जगत से अन्तर्जगत् की ओर अग्रसर होने की प्रक्रिया भी है। मनुष्य का आंतरिक तत्व बुद्धि है, अतएव इतिहास बुद्धिमता की प्रगति भी है और उन्नति भी। कांट के इतिहास का स्वरूप प्रगृति और उन्नति में तथा प्रगति एवं विकास के अन्तर को स्पष्ट करता हुआ दिखलाई देता है।[33]

दर्शनशास्त्र के विकास में हर्डर का महत्वपूर्ण योगदान है।[34] हर्डर के अनुसार अनुभव को तर्क से उपर का स्थान दिया जाना चाहिए और इतिहास को समझने के लिए अन्तर्दृष्टि होनी चाहिए यही उनके इतिहास का स्वरूप है। प्रो. वाल्श के शब्दों में हीगल को परिकल्पनात्मक दर्शन का संस्थापक कहा जा सकता है।[35] हीगल ने इतिहास दर्शन को गंभीर, मौलिक एवं युगान्तकारी स्वरूप प्रदान करते हुए उसे घटनाओं का संकलनमात्र मानने से निषेध कर दिया है और कहा है कि घटनाएँ जो अपने भीतर कार्य–कारण छिपाए होती हैं। इतिहास का सम्बन्ध उनसे होना चाहिए। हीगल का इतिहासकार केवल घटनाओं को निश्चित नही करता, अपितु आन्तरिक प्रवृतियों को हृदयगंम करता है। अतएव इतिहास मानवता की सम्पूर्ण प्रगति का वृतान्त है। हीगल के अनुसार प्रकृति की प्रक्रिया चक्रात्मक है। इसमें तथ्यों की पुनरावृति होती है। प्रकृति विकासशील नहीं है और न इसका इतिहास ही होता है। किन्तु इतिहास चक्रवत नही अपितु रेखावत होता है। इतिहास–प्रक्रिया ईशवरीय परियोजना है।[36] काम्टे आदि सापेक्षवादियों के अनुसार इतिहास एक सामाजिक भौतिकशास्त्र है।[37]

कार्लमार्क्स ने जो हीगल व सापेक्षवादियों से प्रभावित थे, ने कहा कि अनका विचार परिकल्पनात्मक ही नही, अपितु सापेक्षवादी सिद्धांतो पर आधृत वैज्ञानिक भी था। उन्होने इतिहास की प्रत्येक घटना का कारण आर्थिक माना है। अपने द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी व्याख्या के अनुसार उन्होने इतिहास– दर्शन के स्वरूप को स्वीकृति प्रदान की है। स्पेंगलर ने उसके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा कि इतिहास संस्कृतियों की जीवन–लीला है। यह ऐसा जीवनशास्त्र है जिसके नियम अटल एवं अलघ्य है। मानव समाज उन्ही नियमों के अधीन है और मनुष्य उनमें परिवर्तन नहीं कर सकता। टायनबी ने विश्व की संस्कृतियों का अध्ययन करते हुए गूढ रहस्यों पर प्रकाश डाला है। वस्तुतः टायनबी का दर्शन इतना जटिल एवं विस्तृत है कि उनके सर्वांगीण पर्यवेक्षण के लिए एक स्वतंत्र ग्रंथ अपेक्षित है। इनके दर्शन का मुख्य विषय

*Corresponding Author: डॉ. रंजीता जाना

संस्कृति और धर्म रहा है। उनकी मान्यता थी कि किसी समाज का विकास और ह्रास उसकी आंतरिक शक्ति और दुर्बलता के कारण होता है। उनकी यह अवधारण है कि समस्त विश्व का एकीकरण धर्मो का समन्वय और आर्थिक विषमताओं का निराकरण इतिहास की प्रमुख प्रवृतियाँ है।[38]

इस प्रकार हम देखते है 20 वीं सदी की परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल स्पेगलर तथा टायनबी ने परिकल्पनात्मक इतिहास–दर्शन को एक नवीन स्वरूप प्रदान किया।

इतिहासवाद :–

भूमिका : इतिहासकारों ने इतिहास और उसके दर्शन के सम्बन्ध में अपने–अपने समय में अपनी–अपनी पद्धति से जो विचार अभिव्यक्त किये उनका अपना–अपना महत्व है। उनके विचारों का उनके समय और बाद के समयों में भी यथोचित सम्मान हुआ, यहां तक कि उनका वह समय उनके नाम और सिद्धातों के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसे ही लोगो ने 'वाद' शब्द के साथ अनुभववाद, अनुदारवाद, अवतारवाद, आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, भौतिकवाद, विज्ञानवाद, मार्क्सवाद, साम्यवाद, समाजवाद इत्यादि नामों से इंगित किया। इने इतिहासवादों ने समय–समय पर विविध दर्शन–चिंतन पर विविध इतिहास–दर्शन के विविध भी अत्यधिक प्रभावित हुई। अतः इतिहासदर्शनों का अध्ययन कर लेने के पश्चात उनक विचार–भावों से सम्बन्ध रखने वाले सम्पूर्ण ऐतिहासिक वाद–प्रतिवादों का अध्ययन करना आवष्यक है।

इतिहासवाद एक ऐसा शब्द है जो अपने आप में पूर्ण है और इसका सम्बन्ध न तो किसी समय के इतिहास से है और न ही इतिहास से, अपितु इसका प्रयोग हम सम्पूर्ण इतिहास एवं समस्त इतिहासकारों के सातव्य में करते है। इतिहासवाद भी किसी समय विशेष की देन है। आरंभ में इतिहासकारों द्वारा अपने संस्मरणो के आधार पर अपने पूर्वजो के कृत्यों को स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से जो इतिहास लिखा गया उसमें अतीत की घटनाएँ उस समय विवादपूर्ण हो उठी, जब इतिहासकार अपनी–अपनी दृष्टि से अतीत की एक ही घटना का निरूपण करने लगते थे। यह इतिहासवाद की आरम्भिक अवस्था के कारण था। इतिहासवाद के रूप को गंभीरता से विश्वयुद्ध के काल में लिया गया।

सर्वप्रथम ट्रायेल्स ने जब इतिहासवाद का प्रयोग किया तो उसका मन्तव्य केवल इतिहास सम्बन्धी समग्र ज्ञान एवं अनुभवों से ही था। इस प्रवृति के 2 प्रमुख उद्देश्य थे।[39]

1. एतिहासिक ज्ञान
2. प्रवृति सम्बन्धी ज्ञान का अन्वेषण

इतिहासवाद अतीत के सत्यान्वेषण की एक विद्या है। 18 वी सदी के प्रबुद्ध दार्शनिक इतिहासकारों मे बाल्तेयर, तुर्गो, कोंदोर्से ने अतीत की गवेषणा मे इतिहासवाद का प्रयोग किया है।[40] ग्यूडो द रूगिरो ने अपनी इतिहासवाद संबंधी अवधारणा के विषय में लिखा आध्यात्मिक सृष्टि की ऐतिहासिक विद्या द्वारा सत्यान्वेषण की विकास प्रक्रिया।[41] कार्लमैनहीन ने सन् 1924 में इतिहासवाद पर एक लेख लिखकर यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि ऐतिहासिक ज्ञान का प्रयोग आध्यात्मिक तथ्यों की अपेक्षा लौकिक अधिक होना चाहिए, क्योकि इतिहास वस्तुतः सामाजिक मानव के कार्य व्यापारो का अध्ययन होता है न कि अदृश्य आध्यात्मिक तत्वों का अध्ययन होता था। 1936 मे जर्मन इतिहासकार मीरेके ने अपने इतिहासवाद के अन्तर्गत ऐतिहासिक चेतना के प्राचीन एवं आधुनिक अन्तर को स्पष्ट करने का प्रयास किया।[42] कार्ल ए.पापर ने अपनी पुस्तक पावर्टी ऑफ हिस्टारिसिज्म में इतिहासवाद को परिभाषित करते हुए कहा गया है सामाजिक विज्ञान का एक दृष्टिकोण यह कल्पना करता है कि उसका प्रमुख ध्येय एतिहासिक भविष्यवाणी करना है।

इतिहास को इतिहास दर्शन के समान अर्थ एवं प्रयोग में लाने का कार्य एम.सी.डी. आर्की महोदय ने विशेष रूप से किया है।[43] इतिहासवाद के प्रवर्तक माने जाने वाले हीगेल ने भी इतिहास संबंधी ज्ञान के ही इतिहासवाद माना है।[44] डिल्थे के अनुसार इतिहास आत्मप्रकाशीय होता है, इसलिए इतिहास को मस्तिष्क की अभिव्यक्ति कहना उचित है, क्योंकि इसकी रचना मस्तिष्क से होती है। डिल्थे का विचार हर्डर से मिलता जुलता है। हर्डर ने कहा है कि 'सम्पूर्ण इतिहास मन की अभिव्यक्तियाँ होती है। अतीत हमारे वर्तमान के साथ किसी न किसी प्रकार से आबद्ध होता है। अतएव इतिहासवाद की परिसीमा में वर्तमान और अतीत को साथ–साथ रखना ही उचित है।[45] क्रोचे ने इतिहासवाद में जीवन यथा यथार्थ को इसी हेतु इतिहास से अभिन्न कहा, उसने माना है कि मानवीय कार्यो का वैज्ञानिक विश्लेषण असम्भव है। इसलिए उसने सभी इतिहास को समसामयिक इतिहास कहते हुए इतिहासवाद मे सापेक्षवादी विचारधारा का विरोध किया है। स्पेग्लर ने इतिहास को संस्कृतियों को सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है, उसके इतिहासवाद का अभिप्रायः सामाजिक मूल्यों के परिपेक्ष्य में संस्कृतियों का अध्ययन तथा विश्लेषण है। कॉलिंगवुड के अनुसार इतिहासवाद को चिन्तन विद्या के रूप में परिभाषित होना चाहिए, क्योंकि इतिहास में विचारों का ही अध्ययन होता है।[46]

आरतेगा ई.गैसे के इतिहासवाद का अभिप्रायः यह है कि परिवर्तनशीलता विकास का लक्षण है। हेनरी पीरेन के अनुसार इतिहास अतीत मे स्थित मानव समाजों के विकास का विकासात्मक वर्णन है। अन्य शब्दों में, अतीत का परिकल्पनात्मक पुनर्निर्माण है।

इतिहासवाद के क्षेत्र में भौतिकवादी इतिहास की व्याख्या सर्वाधिक लोकप्रिय है। उनके द्वन्दात्मक सिद्धांत के अनुसार इतिहास का निर्माण एक सामाजिक व्यवस्था के अन्त और दूसरों के जन्म से हुआ करता हैं। प्रो. ब्यूरी ने इतिहासवाद को विज्ञान से सम्बद्ध करके परिभाषित किया है, जबकि तुर्गो, कोर्दोर्स तथा लार्डन एक्टन के इतिहासवाद का अभिप्राय निरन्तर प्रगृति से सम्बद्ध है।

इस प्रकार आदर्शवादी, यथार्थवादी, प्रत्यक्षवादी, सापेक्षवादी, मार्क्सवादी की तरह इतिहासवाद भी अतीत की गवेषणा की एक विद्या है। इतिहासवाद तथा अन्य विधाओं में अंतर केवल इतना है कि अन्य विधाओं के माध्यम से अतीत का वर्तमान के परिवेश में विकासशील प्रक्रिया की गवेषणा करता है।

इतिहासवाद अतीत में गति का अन्वेषण करता है, क्योंकि इतिहास गतिशील है। इस प्रकार इतिहासवाद समाजों के विकास का व्याख्यात्मक वर्णन होता है। विकास–प्रक्रिया की गतिशीलता का परिकल्पनात्मक प्रस्तुतीकरण इतिहासवाद का अभिप्राय होता है।

निष्कर्ष :–इतिहास दर्शन तथा इतिहासवाद का उद्देश्य ऐतिहासिक ज्ञान से है। इसे दो विधाओं द्वारा समझा जाता है – विश्लेषणात्मक तथा परिकल्पनात्मक । जहां विश्लेषणात्मक विद्या का स्वरूप वैज्ञानिक तथा आलोचनात्मक है वहीं परिकल्पनात्मक विद्या द्वारा दार्शनिक इतिहासकारों ने इतिहास के स्वरूप को अपने–अपने ढंग से निरूपण किया। यदि इतिहास दर्शन का लक्ष्य किसी विशेष अर्थ की गवेषणा है तो इतिहासवाद का अभिप्राय इतिहास में विकासशील प्रवृत्तियों का रहस्योद्घाटन। इतिहासवाद एतिहासिक ज्ञान की विश्लेषणात्मक तथा परिकल्पनात्मक व्याख्या है।

संन्दर्भ ग्रंथ :–

1. मजूमदार, आर.के.एवं श्रीवास्तव, ए.एन. हिस्टोरियोग्राफी, पृष्ठ 3
2. गोविन्दचन्द पाण्डेय, इतिहास स्वरूप सिद्धांत पृष्ठ 175
3. रेनियर जी.आई – हिस्ट्री – इट्स पर्पज एण्ड मेथड, 1950 पृष्ठ 80
4. राउज, ए.एल. : दि यूज ऑफ हिस्ट्री, 1963, पृ. 52
5. कॉलिंग वुड : दि आइडिया ऑफ हिस्ट्री, पृष्ठ 175
6. कार, ई.एच – व्हाट इज हिस्ट्री, पृ. 30
7. मजूमदार, आर.सी : सम रीसेन्ट ट्रेण्ड्स इन एस.पी.सेन
8. शर्मा, एल.पी : इतिहास और राजनीतिशास्त्र के निबंध, 1976, पृष्ठ सं. 2,3,15
9. कॉलिंग वुड : आइडियाज ऑफ हिस्ट्री, पृष्ठ सं. 1
10. वाल्श : एन इंट्रोडक्शन टू फिलासफी ऑफ हिस्ट्री, पृ. 12
11. कॉलिंग वुड, पृ. 1
12. वाल्श, पृ. 28
13. बुद्धप्रकाश : इतिहासदर्शन, 1968 पृष्ठ 367
14. टी.एम.नॉक्स, पृ. 10
15. पांडे, गोविन्दचन्द : इतिहास स्वरूप एवं सिद्धान्त 1973 पृ. 268
16. वही, पृ. 273
17. टी.एम. नॉक्स, पृ. 10
18. वाल्श, पृष्ठ 16
19. शेक अली : हिस्ट्री इटस थ्योरी एण्ड मैथर्ड, 1975 पृ. 49
20. कॉलिंग वुड, पृष्ठ 1
21. ए.एल. राउज : दि यूज' ऑफ हिस्ट्री 1963, पृ. 47
22. वाल्श, पृष्ठ 19
23. शेकअली, पृष्ठ 49–50
24. गोविंद चंद्र पाण्डे : इतिहास स्वरूप एवं सिद्धांत, पृष्ठ 39,40,42
25. मैडलबाम : नेचर ऑफ हिस्टोरिकल एक्सप्लीनेस पृ. 17
26. शेकअली पृ. 56
27. कॉलिंग वुड, पृ. 1
28. वाल्श, पृ. 26
29. बुद्धप्रकाश : इतिहास दर्शन, 1968, पृष्ठ 218,419
30. पाण्डेय, पृष्ठ 7
31. बुद्धप्रकाश, पृष्ठ 150
32. कॉलिंग वुड, पृष्ठ 18
33. वाल्श, पृष्ठ 121–123
34. पी. गार्डिनर, हिस्ट्री ऑफ हिस्टोरिकल राइटिंग पृष्ठ 40
35. वाल्श, पृष्ठ 218
36. कॉलिंग वुड पृष्ठ 114, 116
37. गार्डिनर, पृष्ठ 74
38. बुद्धप्रकाश, पृष्ठ 297
39. डॉ. परमानंदसिंह : इतिहासदर्शन, पृष्ठ 191–192
40. कोंदोर्से : स्केचर कार ए हिस्टारिकल पिक्चर ऑफ द प्रोग्रेस ऑफ ह्यूमन माइंड, 1955, पृ. 3

*Corresponding Author: डॉ. रंजीता जाना

41. बरफील्ड : हिस्ट्री एंड ह्यूमन रिलेशंस, 1951 पृ. 139
42. अली, शेक – इतिहासदर्शन : उद्देश्य एवं विधि, पृ. 74
43. आर्की, एम.सी.डी : दि सेन्स ऑफ हिस्ट्री, सेक्युलर एण्ड सेक्रेट, 1951, पृष्ठ 11
44. कार, पृष्ठ 98
45. चौबे, झारखंड : इतिहासदर्शन पृष्ठ 306
46. वही, पृष्ठ 307